

## (ii) कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य:-

- ① → कर्मवाच्य के अपने चिह्न 'से' के द्वारा को हटाकर उसके स्थान पर आवश्यकतानुसार कर्ता के चिह्न (ने) का प्रयोग कर दिया जाता है।
- ② → यदि क्रिया वर्तमानकाल या भविष्यत्काल की हो तो कर्तानुसार क्रिया का प्रयोग कर दिया जाता है।
- ③ → भूतकाल की सकर्मक क्रिया होने पर कर्म के लिंग व वचन के अनुसार क्रिया प्रयुक्त होती है।

जैसे- कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य

- ① विजय के द्वारा पत्र लिखा जाता है → विजय पत्र लिखता है।
- ② जानी के द्वारा खाना पकाया जाता है → जानी खाना पकाती है।
- ③ भड़कियों द्वारा गीत गाए गए → भड़कियों ने गीत गाए।
- ④ मुझसे यह दृश्य नहीं देखा गया → मैंने यह दृश्य नहीं देखा।
- ⑤ मजदूरों से पत्थर नहीं लोड़े गए → मजदूरों ने पत्थर नहीं लोड़े।



### (iii) कर्तृवाच्य से भाववाच्य:-

- (i) → कर्ता के साथ 'से/के द्वारा परसर्ग जोड़कर उसे गौण किया जाता है
- (ii) → मुख्य क्रिया को सामान्य क्रिया बनाकर अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन और अकर्मक में प्रयुक्त किया जाता है

जैसे— बच्चा रात में सोता है - कर्तृवाच्य

बच्चा से रात में सोया जाता है - भाववाच्य

## कर्तृवाच्य

① सदियों में लोग नहीं नहते।

② वह छत पर सोता है।

③ रेखा तबल पर नहीं सौती।

④ मोहन गार्मियों में खूब नहाता है।

⑤ बच्चा नहीं रोता।

## भाववाच्य

→ सदियों में लोगों से नहाया नहीं जाता।

→ उससे छत पर सोया जाता है।

→ रेखा से तबल पर सोया नहीं जाता।

→ मोहन से गार्मियों में खूब नहाया जाता है।

→ बच्चा से रोया नहीं जाता।